स्पीड स्केटिंग ट्रैक से आइस हॉकी में ऐतिहासिक एशियाई कांस्य तक: प्रेरक है लद्दाखी अग्रदूत पद्मा चोरोल की कहानी

-आइस स्पोर्ट्स को बढ़ावा देने के खेलो इंडिया मिशन की सराहना, पद्मा 2016 में गठित भारतीय महिला राष्ट्रीय आइस हॉकी टीम की पहली सदस्यों में शामिल

लेह (लद्दाख), 21 जनवरी: भारतीय महिला आइस हॉकी में एक जाना-पहचाना नाम बनने से पहले, पद्मा चोरोल की खेल यात्रा लद्दाख की जमी हुई झीलों पर स्पीड स्केटिंग ट्रैकों से शुरू हुई थी। ऐसे क्षेत्र में, जहां लड़कियों के लिए अवसर सीमित थे और खेल सुविधाएं लगभग न के बराबर थीं, पद्मा ने बर्फ पर अपने एक दशक लंबे करियर के दौरान एक अग्रदूत के रूप में पहचान बनाई।
खेल पद्मा के परिवार में रचा-बसा था। उनके भाई-नवांग स्तुपदान और तैनांग डोरगे (सेना के आइस स्केटिंग खिलाड़ी)- ने उनके करियर को दिशा देने में निर्णायक भूमिका निभाई। महज 10 वर्ष की उम्र में शुरू हुई इस यात्रा में उनके भाइयों का निरंतर प्रोत्साहन पद्मा को प्रतिस्पर्धी आइस हॉकी की ओर ले गया, और वह भी उस दौर में जब लड़कियों को इस खेल में देखना बेहद दुर्लभ था।

अपने शुरुआती दिनों को याद करते हुए पद्मा ने साई मीडिया से कहा, "वे हमेशा मुझे आइस हॉकी अपनाने के लिए प्रेरित करते थे। वे मुझे अधिक मेहनत से प्रशिक्षण लेने, प्रतिस्पर्धा करने और खुद पर विश्वास करने के लिए कहते थे। वे चाहते थे कि मैं इस खेल में अपना नाम बनाऊं।"

पद्मा ने अपने करियर की शुरुआत स्पीड स्केटिंग से की, जिसने उन्हें संतुलन, सहनशक्ति और नियंत्रण विकसित करने में मदद की। हर सर्दियों में, जब लद्दाख की झीलें जम जाती थीं, वह धीरे-धीरे आइस हॉकी की ओर बढ़ीं। उस समय बहुत कम लड़कियां यह खेल खेलती थीं और महिला टीमों के अभाव में उन्हें लड़कों के साथ ही प्रशिक्षण और प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेना पड़ा। वह कहती हैं, "उसी समय मेरा खेल वास्तव में निखरा। लड़कों के साथ खेलने से मैं तेज़, मजबूत और मानसिक रूप से ज्यादा सख्त बनी। जो शुरुआत में मजबूरी थी, वही मेरी सबसे बड़ी ताकत बन गई। इससे मेरी शारीरिक क्षमता और खेल की समझ दोनों में सुधार हुआ।"

2016 में जब भारतीय महिला राष्ट्रीय आइस हॉकी टीम का गठन हुआ, पद्मा उसके पहले सदस्यों में शामिल थीं। चयन गर्व का क्षण था, लेकिन इसके साथ अनिश्चितता भी जुड़ी थी। वह कहती हैं, "हमें नहीं पता था कि अंतरराष्ट्रीय आइस हॉकी की वास्तविक मांगें क्या हैं। सिर्फ राष्ट्रीय टीम में चयनित होना ही एक बड़ी उपलब्धि जैसा लगता था।"

शुरुआती वर्ष बेहद चुनौतीपूर्ण रहे। प्रशिक्षण साल में केवल दो से तीन महीनों तक सीमित था, जो पूरी तरह प्राकृतिक बर्फ पर निर्भर था। न इनडोर रिंक थे, न कृत्रिम सतहें और न ही पर्याप्त प्रतिस्पर्धी अवसर। उपकरणों की भी भारी कमी थी। खिलाड़ियों को अक्सर ऐसे स्केट्स और स्टिक उधार लेने पड़ते थे, जो उनके लिए सही साइज के भी नहीं होते थे।

अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में यह अंतर साफ नजर आया। इनडोर एरेनाओं में कृत्रिम बर्फ पर खेलना बेहद कठिन साबित हुआ। पद्मा याद करती हैं, "वहां की बर्फ कहीं ज्यादा तेज़ और फिसलन भरी होती है। पक को नियंत्रित करना भी एक चुनौती बन जाता था।"

इसके बावजूद टीम ने हार नहीं मानी। धीरे-धीरे आत्मविश्वास बढ़ा। 2019 में भारतीय महिला टीम ने आईआईएचएफ वीमेंस चैलेंज कप ऑफ एशिया डिवीजन-I में कांस्य पदक जीतकर बड़ी सफलता हासिल की। यह उन वर्षों की मेहनत और संघर्ष की पुष्टि थी, जो अक्सर नजरों से ओझल रहे थे।

फिर महामारी आ गई। कोविड-19 के कारण प्रतियोगिताएं और प्रशिक्षण पूरी तरह ठप हो गए और खिलाड़ी लगभग तीन वर्षों तक अंतरराष्ट्रीय बर्फ से दूर रहे। पद्मा कहती हैं, "मानसिक रूप से वह दौर बहुत कठिन था, लेकिन हमने कभी अपना विश्वास नहीं खोया"।

इस विश्वास का फल 2025 में मिला, जब भारतीय टीम ने संयुक्त अरब अमीरात में आयोजित आईआईएचएफ वीमेंस एशिया कप में अंतरराष्ट्रीय मंच पर वापसी की। तमाम चुनौतियों के बावजूद, टीम ने 31 मई से 6 जून, 2025 के बीच ऐतिहासिक कांस्य पदक जीता, जो भारत का दूसरा एशियाई पोडियम फिनिश था।

पद्मा याद करती हैं, "वह पदक बेहद भावुक पल था।इसने हमें यह एहसास कराया कि हम कहां से चले थे (जमी हुई झीलों और उधार के उपकरणों से) और आज हम कहां पहुंच गए हैं।"

वर्तमान में पद्मा भारतीय अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी हैं और यूटी लद्दाख महिला आइस हॉकी टीम की सहायक कप्तान भी हैं। अब वह उन युवा खिलाड़ियों का मार्गदर्शन कर रही हैं, जिन्हें वे अवसर मिल रहे हैं जो कभी उन्हें नहीं मिल पाए थे। उनके अनुसार, इस बदलाव का बड़ा कारण खेलो इंडिया शीतकालीन खेल हैं।

पद्मा कहती हैं, "खेलो इंडिया ने पूरे इकोसिस्टम को बदल दिया है। यह युवा प्रतिभाओं को निखार रहा है और नियमित प्रतिस्पर्धी मंच उपलब्ध करा रहा है।"

पद्मा विशेष रूप से इस बात पर जोर देती हैं कि कैसे इन खेलों ने उन राज्यों के खिलाड़ियों के लिए भी दरवाजे खोले हैं, जहां प्राकृतिक बर्फ उपलब्ध नहीं है।

उन्होंने कहा, "पहले आइस हॉकी को केवल लद्दाख का खेल माना जाता था। अब अन्य राज्यों के खिलाड़ी भी खेलो इंडिया के माध्यम से अनुभव, आत्मविश्वास और पहचान हासिल कर रहे हैं।"

पद्मा के अनुसार, इस मंच ने खिलाड़ियों को पहचान दिलाने, कौशल सुधारने और यहां तक कि रोजगार के अवसर हासिल करने में भी मदद की है। वह कहती हैं, "कई युवा खिलाड़ियों के लिए यह पहला मौका है, जब उन्हें वास्तव में देखा और सराहा जा रहा है,"।

पद्मा इस बात से खुश हैं कि खेल का परिदृश्य बदल रहा है। लद्दाख में अब एक कृत्रिम आइस रिंक है। देहरादून और पुणे ने भी इसका अनुसरण किया है। खेलो इंडिया और अन्य पहलों के तहत संरचित लीग खिलाड़ियों को नियमित प्रतिस्पर्धा और दृश्यता प्रदान कर रही हैं।

अपनी बात समाप्त करते हुए पद्मा ने कहा,"पहली बार भारतीय महिला आइस हॉकी के पास एक स्पष्ट रास्ता है। और यही कारण है कि हम ऊंचे लक्ष्य देख पा रहे हैं। भारतीय महिला आइस हॉकी इस समय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चौथे डिवीजन में प्रतिस्पर्धा कर रही है। घरेलू लीग के स्थापित हो जाने के बाद लक्ष्य स्पष्ट है और वह है 2027 में विश्व चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई करना। और मुझे विश्वास है कि यह लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।"

Abu Dhabi Ice Sports Club
Al Ain Branch
2025
IIHF
ICE HOCKEY
WOMEN'S
ASIA CUP
UNITED ARAB EMIRATES
Al Ain
3RD PLACE

FIT INDIA
SAI
BAUER